

SHRI CHAMU KRISHNA SHASTRY

Shri Chamu Krishna Shastry is the Trustee Secretary of Sanskrit Promotion Foundation, a leading institution in developing Sanskrit Tutorials for students and in producing various new course material for “Sanskrit for Special Purposes”. He is one of the founding members of Sanskrita Bharati, a pioneer organization in popularizing Sanskrit as a spoken language and is working for the rejuvenation of the Indian Knowledge Tradition. Now he is spearheading a movement to teach “Sanskrit Through Sanskrit”

2. Born on January 23, 1956, Shri Shastry, an 'Educationist' by mission, has modernized the Sanskrit Pedagogy through his three decades of consistent efforts and has brought Sanskrit back to everyday life as a vibrant communicative language. His strategies and programs employed in popularizing Sanskrit are unique in the history of any language. He has built a network of Sanskrit volunteers across the globe, projecting Indian soft-power abroad.

3. Shri Shastry, along with his friends, launched “Speak Sanskrit Movement” in 1981 through a simple 2 hours a day 10-Days' Sanskrita Sambhashana Shibiram program and a few million people have benefited from this program. He has been a full time dedicated volunteer of Sanskrita Bharati since 1981 and has inspired thousands of youth to take Sanskrit as their life mission. Shri Shastry was All India Organizing Secretary and All India General Secretary of Sanskrita Bharati, an organization which heralded a new era in the field of Sanskrit Education

4. Shri Shastry developed a new method to teach Sanskrit called “Sarala Sambhashana Paddhati” and has trained thousands of teachers. He has conducted “Speak Sanskrit Class” in Parliament House exclusively for MPs in 1983. Shri Shastry has authored fourteen books and hundreds of articles on contemporary issues. He started Sanskrit Correspondence Course through the medium of 10 Indian languages and contributed to SAFL course (Sanskrit As Foreign Language) successfully in USA. He was the principal organizer of World Sanskrit Book Fair at Bangalore. He launched “Sarasvati Seva Yojana” to publish books in Sanskrit on contemporary subjects.

5. Shri Shastry not only believes that Sanskrit belongs to all irrespective of caste, gender, region or religion but has also worked for social harmony by conducting Sanskrita Sambhashana Shibiram in slums and colonies exclusively for the neglected sections of the society who were deprived of learning Sanskrit for long.

6. Shri Shastry has rendered his service as Senior Consultant Languages in MHRD. He has also served as member of various committees of Central Sanskrit Board, National Manuscript Mission, NCERT, CBSE, UGC etc. He was instrumental in celebrating Year 2000-2001 as 'Sanskrit Year', a program of MHRD which gave momentum to Sanskrit popularization activities. He immensely contributed to “Vision and Road Map for the Development of Sanskrit, Ten Year Perspective Plan” in MHRD. He has also worked with various State Governments for the promotion of Sanskrit and quality improvement in Sanskrit Education.

7. Shri Shastry is one of the youngest scholars to be awarded with the title “Saaraswata Sudhaakara” by Kashi Pandita Parishad in 1984.



श्री चमू कृष्ण शास्त्री

श्री चमू कृष्ण शास्त्री संस्कृत विकास फाउंडेशन के न्यासी सचिव हैं, जो कि छात्रों के लिए संस्कृत को विकसित करने तथा ''विशेष प्रयोजनों के लिए संस्कृत'' हेतु विभिन्न नई पाठ्यक्रम सामग्री तैयार करने में एक अग्रणी संस्थान है। आप संस्कृत भारती, जो कि संस्कृत को बोलचाल की भाषा के रूप में लोकप्रिय बनाने में और भारतीय ज्ञान परंपरा का कायाकल्प करने संबंधी कार्यों में एक अग्रणी संगठन है, के संस्थापक सदस्यों में से हैं। अब आप ''संस्कृत के माध्यम से संस्कृत'' पढ़ाने के एक आंदोलन की अगुवाई कर रहे हैं।

2. आपका जन्म 23 जनवरी, 1956 को हुआ। आप एक शिक्षाविद् होने के साथ-साथ एक मिशन के द्वारा अपने तीन दशकों के निरंतर प्रयासों के माध्यम से संस्कृत शिक्षा शास्त्र को आधुनिकीकृत बनाया और संस्कृत को एक जीवंत संचारी भाषा के रूप में जन-जन के बीच फिर से वापस लाने का कार्य किया। संस्कृत को लोकप्रिय बनाने में नियोजित आपकी रणनीतियां तथा कार्यक्रम किसी भाषा के इतिहास में अप्रतिम हैं। विदेश में भारतीय सॉफ्ट-पॉवर के प्रदर्शन द्वारा आपने पूरे विश्व में संस्कृत स्वयंसेवियों का एक नेटवर्क तैयार किया है।

3. आपने अपने मित्रों के साथ 2 घंटे प्रतिदिन के हिसाब से 10 दिन के एक सरल "संस्कृतसंभाषण शिबिरम" कार्यक्रम के माध्यम से वर्ष 1981 में "स्पीक संस्कृत मूवमेंट'' की शुरूआत की थी और इससे अब तक कई लाख लोग लाभान्वित हो चुके हैं। आप वर्ष 1981 से संस्कृत भारती के पूर्ण कालिक समर्पित स्वयंसेवी हैं और आपने हजारों युवाओं को संस्कृत को अपने जीवन के मिशन के रूप में लेने के लिए प्रेरित किया है। आप संस्कृत भारती, एक ऐसा संगठन जिसने संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में एक नए युग की शुरूआत की, के अखिल भारतीय संगठन सचिव एवं अखिल भारतीय महासचिव रहे।

4. आपने संस्कृत पढ़ाने की एक नई विधि विकसित की जो ''सरल संभाषण पद्धति'' के नाम से प्रसिद्ध है और जिसने हजारों अध्यापकों को प्रशिक्षित किया है। आपने वर्ष 1983 में अनन्य रूप से संसद सदस्यों के लिए संसद भवन में "स्पीक संस्कृत क्लास'' नामक कार्यक्रम संचालित किया। आपने 14 पुस्तकों का लेखन किया है तथा समसामयिक मुद्दों पर सैकड़ों लेख लिखे हैं। आपने 10 भारतीय भाषाओं के माध्यम से संस्कृत पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू किये और यू एस ए में सफलतापूर्वक एस ए एफ एल पाठ्यक्रम (संस्कृत ऐज ए फॉरिन लैंग्विज) में योगदान किया। आप बंगलौर में विश्व संस्कृत पुस्तक मेले के प्रधान आयोजक रहे। आपने समकालिक विषयों पर संस्कृत में पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए ''सरस्वती सेवा योजना'' की शुरूआत की।

5. आप न केवल इस बात के हिमायती रहे हैं कि संस्कृत जाति, लिंग, क्षेत्र अथवा धर्म के भेदभाव से परे सबकी भाषा है अपितु समाज के तिरस्कृत वर्गों, जो लंबे समय से संस्कृत सीखने से वंचित रहे हैं, के लिए अनन्य रूप से मलिन बस्तियों और कालोनियों में संस्कृत संभाषण शिबिरम का आयोजन करके सामाजिक एकता के लिए भी कार्य किया है।

6. आपने मानव संसाधन विकास मंत्रालय में वरिष्ठ भाषा परामर्शक के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। आपने केन्द्रीय संस्कृत बोर्ड, राष्ट्रीय हस्तलिपि मिशन, एन सी आर टी, सी बी एस सी, यू जी सी आदि की विभिन्न समितियों के सदस्य के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। आपने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के वर्ष 2000-2001 को 'संस्कृत वर्ष' मनाने संबंधी कार्यक्रम में मुख्य भूमिका निभायी। जिसने संस्कृत की लोकप्रियता गतिविधियों को गति प्रदान की। आपने मानव संसाधन विकास मंत्रालय में "संस्कृत के विकास के लिए विज़न एवं रूपरेखा- दस वर्षीय पर्सपेक्टिव योजना'' में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपने संस्कृत को प्रोत्साहित करने तथा संस्कृत शिक्षा में गुणवत्ता को सुधारने में विभिन्न राज्य सरकारों के साथ भी कार्य किया है।

7. आप उन युवा विद्वानों में से हैं जिन्हें वर्ष 1984 में काशी पंडित परिषद् द्वारा ''सारस्वत सुधाकर'' उपाधि से सम्मानित किया गया।